परचिन्तन करता टाइम वेस्ट

अपनी घोटने से ही नशा चढ़े

आत्मा की बैटरी को चार्ज है करना

बाप है ज्ञान का सागर डिटेल में देते जो ज्ञान

एक सेकण्ड का मन्त्र नही जो दे कर चले जाते

सारे बीज का और झाड़ का वह ज्ञान सुनाते

बच्चे ज्ञान सुन सुधरे जब तक ज्ञान वो देते रहते

स्वयं प्रति चिंतन कर बनना सतोप्रधान

मैं हूँ आत्मा - इस शरीर को अब भूल जाना

यही है अंत काल का पुरुषार्थ

ज्ञान माना ही है समझ

समझदार कभी खाते नही धोख

योगी की निशानी क्लीन और क्लियर बुद्धि

आदि अनादि संस्कार स्वाभाव को जो लाते स्मृति में

तब ही वो अचल अडोल रह सकते

मेरा बाबा

ॐ शांति!!!